

डॉ. जॉन ओसवाल्ट, यशायाह, सत्र 20, ईसा। 40-41

© जॉन ओसवाल्ट और टेड हिल्डेब्रांट

यह यशायाह की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. जॉन ओसवाल्ट हैं। यह सत्र संख्या 20, यशायाह अध्याय 40 और 41 है।

खैर, मुझे लगता है कि समय आ गया है। मैं यहां हूँ और आप यहां हैं और हमें बस यही चाहिए। आज शाम आने के लिए धन्यवाद। जैसा कि मेरी माँ कहा करती थी, मैं महसूस कर रहा हूँ कि पिछले कुछ दिनों से यह थोड़ा चरम पर है और मैंने सोचा, अगर मैं वहाँ पहुँचने का प्रयास करता हूँ और कोई और नहीं करता है, तो यह वास्तव में निराशाजनक होगा।

लेकिन आप यहाँ हैं। मैं करता हूँ। धन्यवाद। अगर मेरे पास देने के लिए सोने के सितारे हों तो मैं तुम्हें सारे सोने के सितारे दे दूंगा। यह मौसम कुछ-कुछ उस आदमी जैसा है जिसने कहा था, खुश हो जाओ, यह और भी खराब हो सकता है, इसलिए मैंने खुश हो लिया और यह और भी खराब हो गया।

आइए प्रार्थना से शुरुआत करें। पिताजी, हँसी के लिए धन्यवाद। धन्यवाद कि आपने अपनी दुनिया में हमें यह क्षमता दी है। फिर, संगीत की तरह, हम वास्तव में इसे ठीक से नहीं समझते हैं।

अजीब संगीतमय ध्वनियाँ बनाने से हमारा उत्साह क्यों बढ़ जाता है? लेकिन ऐसा होता है, और हम आपको धन्यवाद देते हैं। धन्यवाद कि आपकी दुनिया में, धूसर, बर्फ़ीले, तेज़ हवा वाले दिन में भी, खुशी का कारण है। हम आपको धन्यवाद देते हैं, भगवान, कि हम जानते हैं कि हम कहाँ जा रहे हैं।

हम जानते हैं कि सूर्यास्त से परे, अनंत काल तक हमारे लिए एक उज्ज्वल गर्मी का दिन है, क्योंकि आपने हमारे लिए यीशु मसीह में जो किया है। धन्यवाद। धन्यवाद।

यशायाह में आपके शब्द के लिए धन्यवाद। आप हमें जो सिखा रहे हैं उसके लिए धन्यवाद। आज रात आप हमें फिर से जो सिखाने जा रहे हैं उसके लिए धन्यवाद। और हम प्रार्थना करते हैं कि आप हमारा मार्गदर्शन करेंगे, हमें निर्देशित करेंगे, हमें प्रेरित करेंगे, और हममें से प्रत्येक के लिए यहां जो कुछ है उसे पाने में हमारी मदद करेंगे। और हम आपको धन्यवाद देंगे। आपके नाम पर, आमीन।

जॉन, क्या आप हमें कुछ बता सकते हैं, मुझे भविष्यवक्ताओं में थोड़ी दिलचस्पी है, विशेषकर यशायाह में। क्या आपको लगता है कि वे वहाँ बैठे थे और उन्होंने खुद लिखा था, क्या उन्होंने मूल रूप से ऐसा करने का प्रयास किया था क्योंकि उन्होंने बस इसे बाहर रखा था? या यह इतनी बड़ी मात्रा में काम है, और ये विचार क्या हैं? खैर, यह ऐसा है जैसे आप अपना पैसा चुकाते हैं और विद्वानों की दुनिया में अपनी पसंद लेते हैं। मुझे लगता है कि लगभग निश्चित रूप से यशायाह ने ये बातें छोटे संदेशों में कही थीं, जो संभवतः किसी शिष्य द्वारा लिखित थीं।

और फिर उन्हें यहां यशायाह द्वारा, या शायद उसके किसी घनिष्ठ शिष्य द्वारा एक साथ संगठित किया गया है। लेकिन इस बात पर काफी हद तक सहमति है कि शुरुआत से लिखे गए भविष्यवक्ताओं में से एकमात्र ईजेकील ही था। वे लंबे संदेश हैं, वे अधिक मजबूती से व्यवस्थित हैं।

वस्तुतः बाकी सभी लोग, बहुत अच्छी तरह से सामान्य सहमति यह है कि उन्हें छोटे संदेशों के रूप में बोला गया, कॉपी किया गया, और फिर व्यवस्थित किया गया। ठीक है, हमने अब तक पुस्तक 1 से 6 में दासत्व का आह्वान देखा है। 7 से 39 में, विश्वास, सेवकत्व का आधार है।

और आपको याद होगा, मैं आपको इस पर कोई परीक्षा नहीं दूंगा, लेकिन आपको याद होगा कि मैंने सुझाव दिया था कि कुछ मायनों में, पूरी किताब को अध्याय 6 के पैटर्न पर व्यवस्थित किया गया है। यानी, इसमें मानवीय असहायता का एक दर्शन है जिस वर्ष राजा उज्जिय्याह मरा, उसी वर्ष मैं ने यहोवा को देखा। प्रभु, उनकी पवित्रता और पृथ्वी में व्याप्त उनकी महिमा का एक दर्शन। स्वयं का एक दर्शन, उनकी अशुद्धता, उनका खोयापन।

अग्नि के माध्यम से शुद्धिकरण का अनुभव। और फिर कमीशनिंग। ठीक है, उस आधार पर, यह खंड 7 से 39 असहायता का दर्शन, प्रभु का दर्शन और कुछ हद तक स्वयं का दर्शन होगा, हालाँकि इसमें से और भी आने वाला है।

जैसा कि मैंने पिछले सप्ताह कहा था, अध्याय 36 से 39 तक मामला स्थापित होता है, भगवान पर भरोसा किया जा सकता है। यदि तुम उस पर भरोसा करोगे, तो वह तुम्हें बचाएगा। लेकिन हमने यह भी देखा, विशेष रूप से पिछले सप्ताह, अध्याय 38 और 39 में, कि हिजकिय्याह अध्याय 7 से 12 तक वादा किया गया व्यक्ति नहीं है।

यदि हम आशा की तलाश में हैं, तो हमें उससे परे देखना होगा। वह हमें दिखाता है कि भरोसा केवल एक बार की चीज नहीं है। वन टाइम।

और यह कि हमारी आशा मानवीय पूर्णता में नहीं है। हमने देखा कि परमेश्वर ने हिजकिय्याह के सिद्ध हृदय होने के दावे को बहुत गंभीरता से लिया। एक हृदय जो ईश्वर के लिए अविभाजित था।

लेकिन इसका मतलब उत्तम प्रदर्शन नहीं है। हम वेस्लेवासियों को अपने आप से यह कहते रहना होगा। दुनिया कहती है, यदि आप उत्कृष्ट प्रदर्शन नहीं करते हैं, तो आपके पास संपूर्ण हृदय नहीं है।

और चूँकि हममें से कोई भी पूर्णता से प्रदर्शन नहीं करता है, इसलिए, जो कोई भी पूर्ण हृदय होने का दावा करता है वह झूठ बोल रहा है। खैर, ऐसा प्रतीत होता है कि परमेश्वर ने यह नहीं सोचा था कि हिजकिय्याह झूठ बोल रहा था। ऐसा प्रतीत होता है कि उसने सोचा कि हिजकिय्याह सच कह रहा था।

अपने स्नेह के संदर्भ में, अपने हृदय की दिशा के संदर्भ में, अपने उद्देश्यों के संदर्भ में, वह ईश्वर के लिए एक था। सभी देवता. बिना किसी प्रतिद्वंद्वी के या बिना किसी सीमा के.

लेकिन उनका प्रदर्शन सही नहीं है। इसलिए, यदि हमारे लिए आशा है, तो यह किसी ऐसे व्यक्ति में है जिससे हम अभी तक अध्याय 1 से 39 में नहीं मिले हैं, अध्याय 11 और अध्याय 9 में संभावनाओं को छोड़कर। अब, मुझे लगता है कि पुस्तक में ऐसा न होने का दूसरा कारण है यह यहीं खत्म नहीं होगा। तो, यह पहला कारण है।

हमने स्थापित कर लिया है कि ईश्वर भरोसेमंद है, लेकिन हमने यह नहीं सोचा है कि हमें नियमित, सुलझे हुए मामले के रूप में ईश्वर पर भरोसा करने के लिए क्या प्रेरित करेगा। और फिर यह मुद्दा भी कि, फिर हमें कौन बचाएगा? वह बच्चा कौन था जिसकी भविष्यवाणी अध्याय 7 में की गई थी? इसलिए, 39 के अंत में कुछ प्रश्न यहां लटके हुए हैं। एक और प्रश्न है जिसे पवित्र आत्मा जानता है, और मुझे लगता है कि शायद उसने यशायाह को रहस्य के बारे में बताया, और वह यह है कि क्या भगवान ने उन्हें अश्वर से बचाया होता, जैसा कि हमने सीखा अध्याय 39 के अंत में, वह उन्हें बेबीलोन से नहीं छुड़ाएगा।

ठीक है, अगर भविष्य में यह सच है, वास्तव में 150 साल भविष्य में, तो क्या इससे वह सब कुछ संदेह में नहीं आ जाएगा जो हमने ईश्वर के बारे में सीखा है? हाँ, उसने दादाजी और दादी को अश्वर से बचाया, लेकिन वह हमें बेबीलोन से नहीं बचा सका, है ना? तो, आप यशायाह में उस चीज़ को भी भूल सकते हैं। वह गलत था। भगवान इतना भरोसेमंद नहीं है।

और इसलिए, मेरा मानना है कि यशायाह को पवित्र आत्मा की प्रेरणा से, उस नई स्थिति में अंतर्दृष्टि दी गई है, ताकि उस अद्भुत धर्मशास्त्र को पूरा किया जा सके जो उसे अब तक दिया गया है। तो फिर, हम पुस्तक के अगले भाग की ओर बढ़ते हैं, जो अध्याय 40 से 55 है। और मैंने इसे लेबल दिया है, ग्रेस, मोटिव, एंड मीन्स फॉर सर्वेंटहुड।

नियमित, सतत, बुनियादी स्तर पर ईश्वर पर भरोसा करने के लिए हमें क्या प्रेरित कर सकता है? अनुग्रह। ईश्वर की स्वतंत्र, असीमित, अवांछनीय कृपा। लेकिन फिर सवाल उठता है, तो क्या वह सिर्फ हमारे पाप को नजरअंदाज करेगा? क्या वह बस यह कहने जा रहा है, ठीक है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

हम इसे भूल जायेंगे। मैं आपसे पहले भी अन्य बाइबल अध्ययनों में इस बारे में बात कर चुका हूँ। मुझे नहीं लगता कि मैंने यहां इसके बारे में बात की है।

लेकिन इससे गंभीर सवाल उठेंगे। यह कारण और प्रभाव की दुनिया है। आप केवल प्रभावों को निलंबित नहीं कर सकते।

हम चाहेंगे। तुम्हें पता है, मैं अपनी कार को एक ईंट की दीवार में घुसाना चाहता हूँ और कुछ नहीं होगा। मैं अपने पड़ोसी की निंदा करना चाहता हूँ और उस पर कोई प्रभाव भी नहीं डालना चाहता।

मैं हर तरह की चीज़ें करना चाहता हूँ जो मुझे नहीं करनी चाहिए और इसके लिए कोई कीमत भी नहीं चुकानी पड़ेगी। यह उस तरह की दुनिया नहीं है जिसमें हम रहते हैं। अब, दिलचस्प बात,

और फिर, मैंने यह पहले भी कहा है, मैं इसे फिर से कहूंगा, यह मेरे लिए आकर्षक है, प्राकृतिक दुनिया में किसी को भी इससे कोई समस्या नहीं है।

ओह, प्रिय, यह मूर्खतापूर्ण है। आप अपनी कार को ईंट की दीवार में घुसाकर जीवित नहीं बच सकते। वह पागल है।

अरे हां। लेकिन मैं व्यभिचार कर सकता हूं। और यह कोई समस्या नहीं है, है ना? नहीं।

प्रभाव हैं। बाइबिल बहुत स्पष्ट है। जो प्राणी पाप करेगा वह मर जाएगा।

कोई अगर, कोई और, कोई परंतु नहीं। मर जाऊंगा। तो इससे यह मुद्दा उठता है कि ईश्वर हम पर यह अनुग्रह कैसे करेगा? उसके लिए ऐसा करना एक बात है, लेकिन उसके लिए ऐसा करने में सक्षम होना दूसरी बात है।

खैर, हम उससे दो खंडों में निपटते हैं। सबसे पहले, हमारे पास अध्याय 40 में परिचय है। फिर 41 से 48 में हमारे पास मकसद है, और 49 से 55 में साधन हैं।

कई विषय जो केवल यहां दिखाए जाने वाले हैं वे अध्याय 40 में दिखाई देते हैं, और यह मुझे यह तर्क देने के लिए प्रेरित करता है कि यह परिचयात्मक है। पुनः, यदि आपके सामने छह या सात टिप्पणियाँ हों, तो आप पाएंगे कि इनमें से कुछ मुद्दों पर बहुत अधिक असहमति है। दोनों खंडों के बीच बहुत अधिक असहमति नहीं है, लेकिन हर कोई मेरी तरह प्रकाश को नहीं देख पाएगा और अध्याय 40 को एक परिचय के रूप में नहीं लेगा।

लेकिन मुझे लगता है कि यह है, और हम इसके बारे में बात करेंगे। ठीक है। जैसा कि मैंने टिप्पणी की, बाइबिल में पसंदीदा, पसंदीदा अंशों में से एक का लगभग सभी अनुवादों में बहुत अच्छी तरह से अनुवाद नहीं किया गया है।

मेरे सामने अंग्रेजी मानक संस्करण है। तेरा परमेश्वर कहता है, मेरी प्रजा को शान्ति दे, शान्ति दे। वह अच्छा अनुवाद नहीं है।

आज अंग्रेजी में, आराम का मतलब गर्म फज़ीज़ है। ओह, अपनी बाहें उनके चारों ओर डालो और उन्हें थोड़ा गले लगाओ। 1611 में, आराम यहाँ हिब्रू के लिए एक अच्छा अनुवाद था, क्योंकि 1611 में, आराम का मतलब प्रोत्साहित करना, मजबूत करना था।

आराम, उनकी रीढ़ की हड्डी में कुछ स्टील डालने के लिए। आज निकटतम अच्छे अनुवाद को प्रोत्साहित किया जाएगा। मेरे लोगों को प्रोत्साहित करें।

क्या यह पवित्र आत्मा को दिलासा देने वाला कहे जाने पर लागू होता है? बिल्कुल, बिल्कुल। सवाल यह था कि क्या यह बात पवित्र आत्मा को दिलासा देने वाले कहे जाने पर लागू होती है? बिल्कुल। पवित्र आत्मा वह है जो हमें तब खड़े होने में सक्षम बनाने के लिए हमारे साथ आता है जब दुनिया ने हमें नीचे गिरा दिया हो।

जब दुनिया कहती है कि आप बेकार हैं, जब दुनिया कहती है कि आप असहाय हैं, जब दुनिया कहती है कि आप मूर्ख हैं, तो दिलासा देने वाला हमारे पास खड़ा होता है। वह सिर्फ हमारे चारों ओर अपना हाथ रखकर यह नहीं कहता है, सब ठीक हो जाएगा, प्रिये। यह रीढ़ की हड्डी में स्टील है।

अब, जो प्रश्न मैं यहां पूछता हूं वह यह है कि याद रखें, हमारी समय सीमा नाटकीय रूप से बदल गई है। हम 739 से 701 ईसा पूर्व की समय सीमा में थे। अब हम लगभग 560 ईसा पूर्व की समय सीमा में हैं।

इसीलिए मैं कहता हूं कि यह भविष्य में 140, 50 वर्ष है। अब फिर, अधिकांश टिप्पणीकारों का कहना है कि यह असंभव है। और फिर, आपको इस बारे में सोचना होगा।

क्या मैं 150 साल बाद 2163 में किसी से बात कर सकता हूँ? निश्चित रूप से मेरी अपनी शक्ति में मैं ऐसा नहीं कर सका। लेकिन सवाल यह है कि क्या पवित्र आत्मा किसी को भविष्य में 150 वर्षों तक किसी से बात करने के लिए प्रेरित कर सकता है यदि यह पुस्तक में पवित्र आत्मा के उद्देश्य के लिए महत्वपूर्ण था? और मेरा उत्तर है, क्यों नहीं? इस पर कुछ और कारक, क्योंकि आप टिप्पणियों में पढ़ेंगे, हाँ, पहला यशायाह है। वह 1 से 39 है।

वहाँ दूसरा यशायाह है। वह 40 से 55 है। और तीसरा यशायाह है।

वह 56 से 66 है। अब, टिप्पणियाँ हमेशा 25 से 30 साल पुरानी होती हैं। आज कोई भी विद्वान यह नहीं मानता कि कोई तीसरा यशायाह था जिसने लिखा था।

वास्तव में, आज कई लोगों को संदेह होगा कि क्या पहला यशायाह था। दूसरा यशायाह, हाँ, हाँ, हाँ, हाँ। निर्वासन में वह आदमी, वास्तव में उसके पास यह सब था।

उन्होंने यहां कुछ महान धर्मशास्त्र लिखे। लेकिन यह सामान कहां से आया, वास्तव में कोई नहीं जानता। और जैसा कि मैंने आपसे पहले कहा था, इस पुस्तक को इस मूल आधार पर एक साथ रखना 400 साल लंबी समिति प्रक्रिया थी।

खैर, मुझे आपसे कहना होगा, जैसा कि मैंने पहले कहा है, मैंने दुनिया की सबसे महान साहित्यिक कृतियों में से एक को किसी समिति द्वारा एक साथ रखते हुए कभी नहीं देखा है। आप जानते हैं कि ऊँट क्या होता है। यह एक समिति द्वारा डिज़ाइन किया गया घोड़ा है।

इसलिए मुझे ऐसा नहीं लगता। अब, इससे पहले कि मैं उससे दूर जाऊं और आगे बढ़ूं, यहां एक और बात है। यह बहुत दिलचस्प है कि पुस्तक के इस भाग में, आपके पास बहुत सारे विशिष्ट ऐतिहासिक विवरण हैं, बस एक तरफ।

अरे हाँ, अध्याय 22 में हिजकियाह उस तालाब को देख रहा है जिसे उसने बनाया है। हाँ। अंदाज़ा लगाओ? पुस्तक के शेष भाग में लगभग कोई ऐतिहासिक विवरण नहीं है।

क्यों नहीं? खैर, एक विद्वान जिनकी मैं ईमानदारी के लिए सराहना करता हूं, कहते हैं, जाहिर है, इन बाद की समिति के सदस्यों ने उन ऐतिहासिक विवरणों को हटा दिया ताकि यह प्रतीत हो सके कि वे पहले से लिखे गए थे। वह अब मर चुका है, इसलिए मुझे लगता है कि वह बेहतर जानता है। लेकिन मुझे लगता है कि एक बेहतर व्याख्या यह है कि यशायाह उन ऐतिहासिक विवरणों को नहीं जानता था।

और उसे उन्हें जानने की आवश्यकता नहीं थी। पवित्र आत्मा को उसे, एक बड़े नाम को छोड़कर, उनके उद्धारकर्ता का नाम नहीं देना था। मुझे लगता है कि यह इस बात का बेहतर स्पष्टीकरण है कि ऐतिहासिक विवरण यहां क्यों नहीं हैं।

हां, वह वहां की सामान्य स्थिति को देखता है। वह जानता है कि वह क्या है। लेकिन मुझे लगता है कि अगर आपने यशायाह से पूछा होता कि निर्वासन कहां होने वाला है, तो उसने कहा होता, मुझे नहीं पता।

वे किस वर्ष मुक्त किये जायेंगे? मुझे लगता है वह कहेगा, मुझे नहीं पता। तो, मेरे लिए, यह पुस्तक के एकल लेखकत्व के पक्ष में एक स्पष्ट बिंदु है। अब एक और कारक है जो मुझे लगता है कि और भी महत्वपूर्ण है कि हम आज रात बात करेंगे, और फिर अगले कुछ हफ्तों में कई बार बात करेंगे।

ठीक है। वह कौन सा रवैया है जिसके लिए प्रोत्साहन की आवश्यकता है? यह एक सॉफ्टबॉल है। निराशा.

निराशा. अब वनवासी क्यों हतोत्साहित होंगे? वे ऐसा क्यों नहीं करेंगे? ठीक है, ठीक है। ठीक है ठीक है।

नंबर एक, उन्होंने सोचा होगा कि भगवान हार गए हैं। वर्षों से उनकी आत्म-पहचान क्या रही है? हम चुने हुए लोग हैं. स्पष्टतः, हम चुने हुए लोग नहीं हैं।

हाँ, हम भूले हुए लोग हैं। यरूशलेम के बारे में क्या खास था? मंदिर। और मंदिर कौन सा था? भगवान का घर.

हाँ, भगवान का घर अपवित्र है। अब, मैं तुम्हारे बारे में नहीं जानता, मुझे डर है कि यह मेरी छोटी सोच का प्रमाण है। मुझे लगता है कि अगर मैं भगवान होता, तो मेरी प्रतिक्रिया होती, आपको क्या लगता है कि मैं इसे कब से टाल रहा हूं? लगभग एक हजार वर्षों से यह आपके पास आ रहा है।

नहीं - नहीं। मेरे लोगों को प्रोत्साहित करें. मेरे लोगों को प्रोत्साहित करें.

शाब्दिक रूप से पद दो, यरूशलेम के दिल की बात करता है। बोअज़ ने रूत के साथ खलिहान पर यही किया। उसने उसके दिल की बात कही।

रात के उस पहर में जहां उसका पूरा जीवन तलवार की धार पर लटका हुआ था। और बोअज़ ने उसके मन की बात कही। परमेश्वर यही करना चाहता है।

लेकिन केवल, वह ऐसे व्यक्ति से बात करने जा रहा है, जो कम से कम वहां एक खिड़की खुली है, जो प्रोत्साहन की तलाश में है। चूँकि मैं नीचे चला गया, मैंने मोहभंग, पराजय इत्यादि को सामने रख दिया। और मैंने सोचा, ठीक है, उन चुने हुए कुछ लोगों के बारे में क्या ख्याल है, शायद उन्हें प्रोत्साहन की आवश्यकता थी क्योंकि उन्होंने सुरंग के अंत में कुछ रोशनी देखी थी, लेकिन वे नहीं जानते थे कि इसके साथ क्या करना है।

हां, हां, वहां एक कोर होना चाहिए जो इस प्रोत्साहन को प्राप्त कर सके, जो इस संदेश को प्राप्त कर सके। और यह बिल्कुल सही है। अवशेष सदैव फोकस में रहता है।

हमेशा फोकस में। वहाँ एक कोर है जो विश्वास करता है। उनका विश्वास लगभग टूट गया है, लेकिन वे अभी भी विश्वास करते हैं।

हाँ, हाँ, बहुत अच्छा। उसका अधर्म क्षमा हो गया। 49 से 55 है।

कैसे? खैर, उसे अपने सभी पापों के लिए प्रभु के हाथ से दोगुना मिला है। ओह, उसने इसके लिए भुगतान किया है। ये सब नहीं।

इजराइल अभी मरा नहीं है। तो फिर, निर्वासित लोग जो प्रश्न पूछ रहे हैं वह है, नंबर एक, क्या ईश्वर उद्धार करना चाहता है? हो सकता है कि उसने इसे हमारे साथ रखा हो। यदि वह बेबीलोन से नहीं हारा है, तो वह हमारे पापों से हारा है।

वह नहीं चाहता था कि ऐसा हो, लेकिन आखिरकार वह इसके बारे में कुछ नहीं कर सका। तो क्या वह हमारा उद्धार करना चाहता है? या क्या वह कहता है, मैं उस झुंड से हाथ धो रहा हूँ? मैंने उन्हें ये सभी अवसर दिये हैं। मैंने उन्हें ये सभी संभावनाएँ दी हैं, और उन्होंने उनमें से प्रत्येक को नष्ट कर दिया है।

दूसरा प्रश्न यह है कि क्या ईश्वर उद्धार कर सकता है? मान लीजिए वह चाहता है, लेकिन हे, देखो इन बेबीलोनियाई देवताओं ने क्या किया है। वे दुनिया भर में घूमे। क्या वह उद्धार कर सकता है? और अंततः, क्या वह उद्धार करने जा रहा है? हाँ, वह चाहता है, वह कर सकता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वह ऐसा करने जा रहा है।

अब, यशायाह जानता है कि वे ये प्रश्न पूछेंगे। जैसा कि मैंने कहा, वह नहीं जानता कि वे बेबीलोन में कहाँ होंगे। शायद अगर आप उनसे पूछते कि मंदिर कब टूटेगा तो वे कहते, मुझे नहीं पता।

लेकिन मैं जानता हूँ कि ये निराश, निराश लोग क्या कहने वाले हैं। तो, श्लोक तीन, चार और पाँच में, भगवान यहाँ क्या प्रोत्साहन देते हैं? क्या बोल रहा था? सज़ा खत्म हो गई। और क्या? प्रभु की महिमा दिखेगी।

सभी प्राणी इसे एक साथ देखेंगे। अब, नए नियम में तीन से पाँच कहाँ दिखाई देते हैं? मैंने आपको वहाँ संदर्भ दे दिया है। किसने कहा? अथवा किसके बारे में कहा गया था? जॉन द बैपटिस्ट।

जॉन द बैपटिस्ट। अब फिर से, आप देखिए, ईसा के समय तक ये यहूदी लोग धर्मग्रंथों में ही डूबे हुए थे। वे उन्हें पीछे, आगे और किनारे से जानते थे।

तो, जैसे ही कोई नया भविष्यवक्ता प्रकट होता है, और 400 वर्षों से कोई नहीं हुआ था, ये लोग जिनके कानों से भविष्यवक्ता निकलते थे, वे भविष्यवक्ताओं की मृत्यु तक बीमार पड़ गए। और अचानक, बिंगो, कोई नहीं। और अचानक, यहाँ एक है।

और जैसे ही वह प्रकट होता है, कोई कहता है, वह यशायाह है। वह यशायाह है। तो श्लोक तीन, चार और पाँच अंततः किस घटना का जिक्र कर रहे हैं? मसीह का आगमन।

वहाँ उसकी कृपा प्रकट होती है, और ऐसे साधन हैं जिनसे वह अपनी कृपा बढ़ा सकता है। और यहोवा की उद्धार की इच्छा के बारे में क्या? ये आयतें इसके बारे में क्या कहती हैं? हां हां। वह नहीं चाहता कि वे अपनी निराशा में, अपनी कैद में रहें।

वह जंगल में उनके पास आना, यहोवा के लिये मार्ग तैयार करना, और हमारे परमेश्वर के लिये जंगल में सीधा राजमार्ग बनाना चाहता है। मैं हमेशा आरजी लेटन्यू से आकर्षित रहा हूँ। यह वह व्यक्ति है जिसने पृथ्वी से चलने वाले उपकरण का आविष्कार किया था।

और जब युद्ध शुरू हुआ तो उसने इसे 37 और 38 और 39 में ही किया था। और जो भी पृथ्वी-चालित उपकरण आप देख रहे हैं वह आरजी लेटन्यू का डिज़ाइन है। मैं मोहित हो गया क्योंकि वह ईसाई था।

और 40 के दशक के अंत या 50 के दशक की शुरुआत में, उन्होंने अपने व्यवसाय के लिए पूरे देश में उड़ान भरी और फिर प्रचार भी किया। और उन्होंने एक परिवर्तित बी-26 बमवर्षक विमान में उड़ान भरी। और 9 या 10 साल के बच्चे के लिए, यह वास्तव में कुछ था।

लेकिन मुझे लगता है कि लेटन्यू के बहुत पहले से ही विशाल पृथ्वी-चालित उपकरण का विचार था। हमारे परमेश्वर के लिये जंगल में सीधा राजमार्ग बनाओ। हर घाटी भर दी जाएगी, हर पहाड़ और पहाड़ी काट दी जाएगी।

क्यों? ताकि भगवान अपने असहाय लोगों के पास आ सकें। वह यह नहीं कहता, अब तुम प्रयास करो और मेरे पास आओ। यदि उसने ऐसा किया, तो हम अपने पापों में खो जायेंगे।

लेकिन भगवान यीशु मसीह में हमारे पास आये हैं। और आशा है। ठीक है।

लेकिन आइए अब छंद 6, 7, और 8 को देखें। यह बहुत उत्साहजनक नहीं है, है ना? सब मांस घास है, उसकी सारी सुंदरता मैदान के फूल की तरह है। घास सूख जाती है और फूल मुरझा जाता है। यह कैसा उत्साहवर्धक है? बिल्कुल।

बेबीलोन. आपको लगता है कि बेबीलोन एक भूरा, विशालकाय राक्षस है। मैं आपको कुछ कहना चाहता हूँ।

बेबीलोन घास का एक तिनका है। हाँ, तुम घास का एक तिनका हो। लेकिन वे ऐसे ही हैं।

खैर, हममें घास और उनमें घास में क्या अंतर है? पद 8 के अंतिम भाग को देखें। घास सूख जाती है, फूल मुरझा जाता है, परन्तु प्रभु का वचन सदैव स्थिर रहता है। इससे फर्क पड़ता है। आप और मैं घास हैं।

हम खेत के फूल हैं। लेकिन अगर, वास्तव में, ईश्वर का वचन हमसे बोला गया है और हमने इसे अपने अंदर ले लिया है, तो इसमें अनंत काल का स्वाद है। खैर, हम श्लोक 9, 10 और 11 पर चलते हैं।

सिथ्योन और यरूशलेम नष्ट हो गए हैं। तो, वे मुक्ति के अग्रदूत कैसे हो सकते हैं? वहां अभी भी कुछ लोग थे, लेकिन मुझे लगता है कि यहां कुछ और ही चल रहा है। भगवान अक्सर हमसे बातें तब कहते हैं जब वर्तमान क्षण में उसके साकार होने की कोई संभावना नहीं होती, लेकिन वह चाहते हैं कि हम इस विश्वास के साथ उस पर कायम रहें कि क्या होने वाला है।

डेनिस किनलों के पास इस बारे में बात करने का अद्भुत तरीका था। उन्होंने कहा, तुम्हें पता है, एक दिन इब्राहीम एक छोटी गाड़ी लेकर घर आया। और सारा ने कहा, तुम उसके साथ क्या कर रहे हो? ठीक है, सारा, तुम्हें बच्चा होने वाला है।

इब्राहीम, क्या तुमने कैलेंडर देखा है? खैर, प्रभु ने यही कहा है। और इसलिए यहाँ, वह कह रहा है कि वह दिन आने वाला है जब तुम लोग परमेश्वर के उद्धार की खुशखबरी सुनाओगे। और मुझे लगता है कि बेबीलोन के उन निर्वासितों में से कुछ ने एक-दूसरे की ओर देखा और कहा, क्या आप इस पर विश्वास करते हैं? उनमें से बहुतों ने कहा नहीं, लेकिन उनमें से कुछ ने कहा, क्यों नहीं? क्यों नहीं? अच्छा, चलो जल्दी करें।

तो, हमने उस पहले प्रश्न का उत्तर दे दिया है। क्या भगवान उद्धार करना चाहते हैं? हाँ। लेकिन अब सवाल यह है कि क्या भगवान उद्धार कर सकते हैं? और वह श्लोक 12 से 26 में है।

हमारे पास अलंकारिक प्रश्नों का एक पूरा समूह है। क्या आप जानते हैं अलंकारिक प्रश्न क्या होता है? एक प्रश्न जो एक निश्चित उत्तर मानता है। किसने जल को अपनी हथेली से मापा है? प्रभु की आत्मा को किसने निर्देशित किया है? उन्होंने किससे सलाह ली? उसे किसने समझाया? किसने उसे न्याय का मार्ग, ज्ञान का मार्ग, और समझ का मार्ग दिखाया? उन सभी सवालों का जवाब क्या है? कोई नहीं।

कोई नहीं। और यह प्राचीन विश्व पर शासन करने वाले बहुदेववाद के विरुद्ध एक शक्तिशाली वक्तव्य है। जब भी देवता कुछ करते थे, तो सबसे पहले सलाह लेते थे।

क्योंकि देवालय का निर्माण और कल्पना, शाही दरबार के आधार पर की गई थी। इसलिए राजा कभी भी बिना परामर्श के कोई कार्य नहीं करता था। विशेषकर अपने विश्वस्त परामर्शदाता जादूगर से।

और यशायाह कहता है, उनमें से कोई भी नहीं था। परमेश्वर ने यह सब अपने आप से, अपने उद्देश्यों और इरादों से किया। बहुत खूब।

परमेश्वर ने अय्यूब से जो कहा था, वह उसी की प्रतिध्वनि है, है न? हां। हां। हां।

अय्यूब, क्या तुम जानते हो कि बर्फ के भण्डार कहाँ हैं? नहीं। हाँ। बहुत ज्यादा।

बहुत ज्यादा। तो, राष्ट्रों के बारे में इसका क्या मतलब है? श्लोक 15. वे बाल्टी में एक बूँद हैं।

सीएस लुईस ने अंग्रेजी भाषा पर किंग जेम्स संस्करण के प्रभाव पर एक पुस्तक लिखी जो बहुत अच्छी तरह से ज्ञात नहीं है। और उसके पास ऐसे वाक्यांशों की सूची है जो किंग जेम्स बाइबिल के कारण अंग्रेजी भाषा में हैं। एक बाल्टी में डालो।

किंग जेम्स के ठीक बाहर आता है। आपके दांतों की त्वचा. किंग जेम्स के ठीक बाहर।

और वहाँ केवल उन चीजों के पत्रे हैं जो किंग जेम्स... और आप जानते हैं, मैंने अपनी दादी की लाइब्रेरी को देखा था। और यह एक किंग जेम्स बाइबिल और एक सहमति और एक बाइबिल शब्दकोश था। और उनके साथ, उन्होंने 40 वर्षों तक लेडी संडे स्कूल की कक्षा को पढ़ाया।

जो लोग पहाड़ों पर आये उनमें से बहुत से लोग बाइबल लेकर आये। और यही उनकी कहानियों का स्रोत था। वही उनकी कल्पनाओं का स्रोत था।

खैर, यह मुफ्त है। ठीक है। वह समुद्र तट पर कब्ज़ा कर लेता है।

मैं इस अगले सप्ताह के पाठ की पृष्ठभूमि में इस पर टिप्पणी करता हूँ। तटीय भूमि या द्वीप पृथ्वी के अंत का संकेत देते हैं। इसलिए जब यह कहता है कि वह समुद्र तट पर कब्ज़ा कर लेता है, तो इसका मतलब है कि वह पूरी पृथ्वी पर कब्ज़ा कर लेता है।

तुम्हें पता है, पूरा ब्रह्मांड उसके विस्तार में फिट बैठता है। वह बहुत बड़ा भगवान है। वह ब्रह्मांड नहीं है।

वह ब्रह्मांड को अपनी मुट्ठी में रखता है। तो फिर, हम श्लोक 18, 19, और 20 में इस पर आते हैं। तो आप भगवान की तुलना किससे करने जा रहे हैं? क्या आप स्वर्ग के लिए उसकी तुलना एक मूर्ति से करने जा रहे हैं? या नरक के लिए, जैसा भी मामला हो? चलो भी।

एक मूर्ति? एक कारीगर इसे ढालता है। सुनार उसे सोने से मढ़ता है। इसकी चाँदी की जंजीरों के लिए ढलाई।

वह जो इस तरह की भेंट के लिए बहुत गरीब है वह ऐसी लकड़ी चुनता है जो सड़ती नहीं है, और एक ऐसी मूर्ति स्थापित करने के लिए एक कुशल कारीगर की तलाश करता है जो हिल न सके। क्या आप मेरी तुलना उससे करने जा रहे हैं? क्या आपको लगता है कि ये बेबीलोनियाई मूर्तियाँ मेरे साथ एक ही कक्षा में हैं? अगर वह आज बोल रहे होते, तो मुझे लगता है कि वह कहते, मुझे एक ब्रेक दीजिए। क्या आप नहीं जानते? क्या तुमने नहीं सुना? क्या तुम्हें यह नहीं बताया गया? श्लोक 22 मेरे लिए सदैव आकर्षक रहा है।

वह ही पृथ्वी के घेरे के ऊपर विराजमान है। अब, वे कभी सीअर्स टावर में नहीं रहे थे। वे पाइक्स पीक जैसे वास्तव में ऊँचे पहाड़ पर कभी नहीं गए।

यशायाह को कैसे पता चला? मुझे नहीं लगता कि वह यहां आवश्यक रूप से विश्व के बारे में बात कर रहे हैं। लेकिन वह समझता है कि हमारा दृष्टिकोण एक वृत्त है। आकर्षक।

ठीक है। मुझे इस बारे में पता नहीं था। आकर्षक।

आकर्षक। ठीक है। श्लोक 23.

हमें देवताओं से डरने की जरूरत नहीं है। हमें राष्ट्रों से डरने की जरूरत नहीं है। आयत 23 क्या कह रही है कि हमें डरने की जरूरत नहीं है? पृथ्वी के राजकुमार और शासक।

फिर श्लोक 25 और 26 में वह वापस आता है। अब, मैंने पृष्ठभूमि में उल्लेख किया है कि सितारों को देवता माना जाता था। स्वर्ग के यजमान देवता हैं।

तो, क्या यहोवा देवताओं में से एक है? नहीं, वह देवताओं को नाम लेकर बुलाता है। चलो, ओरियन, तुम आज रात धीमे हो रहे हो।

चलो भी। थोड़ा और उज्ज्वल चमकें। अब, यह दिलचस्प है।

वह ठीक हमारे साथ चिपक गया है। भोर के तारे का क्या नाम है? शुक्र। ग्रीस और रोम में, सुमेर में 5,000 साल पहले, शुक्र सुबह का तारा था।

वास्तव में, सुमेरियन में प्रतीक, जो एक चित्रात्मक भाषा के रूप में शुरू हुआ, भगवान के लिए सुमेरियन शब्द दिर है। उस शब्द का चित्रलेख तारा है। तो, हम बहुत दूर नहीं गए हैं।

5,000 साल पहले सुमेरियन लोग सुबह के तारे को शुक्र कहते थे, या उनका नाम इनाना था। लेकिन यह वहां है। तो, आप मेरी तुलना किससे करने जा रहे हैं? मैंने किससे सलाह ली? आप मेरी तुलना किसी मूर्ति से करने जा रहे हैं? क्या आपको लगता है कि राष्ट्र मेरे लिए कोई समस्या उत्पन्न करते हैं? क्या आपको लगता है कि राष्ट्रों के शासक मेरे लिए समस्या उत्पन्न करते हैं? क्या आपको लगता है कि स्वर्ग का मेज़बान मेरे लिए कोई समस्या है? नहीं - नहीं।

क्या भगवान उद्धार कर सकते हैं? और मैंने यह सब मिटा दिया. हां हां हां। लेकिन क्या वह उद्धार करने जा रहा है? पद 27 के बारे में क्या? वो क्या कह रहे थे? भगवान हम पर कोई ध्यान नहीं दे रहे हैं.

हाँ, भगवान उद्धार करना चाहता है. हाँ, भगवान उद्धार कर सकते हैं। लेकिन इस बात का कोई सबूत नहीं है कि वह जा रहा है।

अन्यथा, कल जब मैंने उससे कहा होता तो वह ऐसा कर चुका होता। मैं आपके बारे में नहीं जानता, लेकिन मैं भगवान को यह बताने में बहुत अच्छा हूँ कि क्या करना है और कब करना है। और मैं अक्सर सोचता हूँ कि संभवतः यह उसे वह करने से रोकता है जब उसने योजना बनाई थी।

तुम यह क्यों कहते हो कि मेरा मार्ग यहोवा से छिपा है? मेरे ईश्वर ने मेरे अधिकार की अवहेलना की है। क्या आप नहीं जानते? क्या तुमने नहीं सुना? यहोवा अनन्त परमेश्वर है। पृथ्वी के छोर का निर्माता.

अब, सृष्टि के लिए शब्द बाइबल में कहीं और की तुलना में यशायाह के इस खंड में अधिक पाए जाते हैं। उत्पत्ति से बहुत अधिक। किसी भी अन्य स्थान से अधिक.

और इसलिए मैं चाहता हूँ कि जब हम आगे बढ़ें तो आप उस पर नजर रखें और सोचें, यशायाह इस पर जोर क्यों दे रहा है? वह बेहोश नहीं होता. वह थकता नहीं। उसकी समझ अप्राप्य है।

वह मूर्ख को शक्ति देता है। जिसके पास कोई ताकत नहीं, वह ताकत बढ़ाता है। यहां तक कि तुम बेहोश हो जाओगे और थक जाओगे।

जवान थक कर गिर पड़ेंगे, परन्तु भरोसा रखनेवाले। विश्वास। और आपको याद है कि हमने वजन की पूरी अवधारणा के बारे में क्या बात की थी।

यह तोल रहा है, अपेक्षा सौंप रहा है। और यह हम आदम और हव्वा की संतानों के लिए कठिन है। मैं अब वही चाहता हूँ जो मैं चाहता हूँ।

और मैं इंतज़ार नहीं करना चाहता. और भगवान कहते हैं, ठीक है, तुम जा रहे हो। अब प्रश्न यह है कि आप किस भाव से प्रतीक्षा करेंगे? आत्मविश्वास भरी उम्मीद या निराश निराशा? हाँ? इसे गूँथ लिया गया है या मिश्रित किया जाना है।

वे चाय और पानी का उपयोग करते हैं। और कहते हैं चाय है या पानी है? खैर, यह चाय है और यह पानी है। इसे मिश्रित कर दिया गया है.

इसे फ़्यूज़ कर दिया गया है. इसे एक साथ गूँथ लिया गया है. वज़न और भरोसा, मैं मानता हूँ कि आपका मतलब यही है।

हाँ। और हां? यह थोड़ा रूपांतरित है। हमें विश्वास करना होगा कि वह हमें समझता है।

ओह, यह है। यह है। ईश्वर।

यहाँ एक बहुत ही सरल उदाहरण है। लेकिन, कहीं न कहीं, एक बहुत बड़ा कंप्यूटर है जो आपको जानता है। वहाँ इतने बड़े पैमाने पर डेटा के साथ, सही संख्या में पंच करें, और मैरी जो मॉरो आती हैं।

मैं ईश्वर को कंप्यूटर तक सीमित नहीं करना चाहता। लेकिन इससे मुझे यह सोचने में मदद मिली है कि जिसने यह सारी दुनिया बनाई, उसके पास इसके सभी डेटा तक तुरंत पहुँच है। और वह जानता है कि आप क्या सोच रहे हैं।

वह जानता है कि मैं क्या सोच रहा हूँ। वह जानता है कि हम क्या महसूस करते हैं। और, वास्तविक अर्थ में, ऐसा हुआ है... और, फिर से, मैं इसे कहते समय बेहद सावधान रहना चाहता हूँ।

लेकिन, वास्तविक अर्थ में, यीशु के बाद से यह उनके लिए अधिक अनुभवात्मक वास्तविकता बन गया है। सैद्धांतिक रूप से, वह जानता था कि यीशु के आने से पहले मानवता के बारे में सब कुछ होना था। लेकिन अब वह इसे अनुभव से जानता है।

हाँ। उसके बाद उन्होंने उसे छुआ। मेरा मतलब है, यीशु के आने के बाद, वह एक जालसाजी के साथ आया था।

लेकिन वह अभी भी भगवान के साथ है। ओह हां। हां हां।

और इसीलिए मैं कहता हूँ, मैं अत्यंत, अत्यंत सावधान रहना चाहता हूँ। ऐसा कुछ भी नहीं था जिसे परमेश्वर यीशु के आने से पहले नहीं जानता था। लेकिन, लेकिन, जैसा कि किसी ने कहा है, शायद किनलाव, अब स्वर्ग के सिंहासन पर एक इंसान बैठा है।

हाँ। चूँकि हम इस सब से गुज़र रहे हैं इसलिए यह एक त्वरित प्रश्न है जिसे ध्यान में रखना चाहिए। पूरे इस्राएल को मिस्र और फ़िरौन से बहुत पहले ही मुक्ति मिल चुकी है और बहुत कुछ दोबारा दोहराया जा रहा है, मेरा मतलब है, ये बच्चे, जो लोग इसमें थे, उन्हें भगवान ने अपने बच्चों को सिखाने के लिए बुलाया था और उनके बच्चे, पीढ़ी दर पीढ़ी, परमेश्वर के उद्धार की ये कहानियाँ, परमेश्वर के हाथ की कहानियाँ।

तो क्या हुआ? क्या केवल हृदय की कठोरता के कारण ही यह लुप्त हो गया? परंतु यह उस संपूर्ण विचार के विरुद्ध है कि ईश्वर सर्वोपरि चाहता था कि ऐसा हो। तो, इसमें मेरी मदद करें। आप वहाँ से यहाँ तक कैसे पहुँचे और अब हम यहाँ हैं? आपने खुद को कैसे याद दिलाया? चर्च पर एक अच्छी नज़र डालें।

क्या होता है, क्या होता है कि हम लगातार उसी पुराने मुद्दे से भटकते रहते हैं। मेरी जरूरतें हैं। मुझे नहीं लगता कि ईश्वर को मेरी ज़रूरतों के बारे में पता है या अगर वह जानता है, तो उसे उनकी परवाह नहीं है।

इसलिए, अपनी जरूरतों को पूरा करने का एकमात्र तरीका यह है कि मुझे इसे स्वयं करना होगा। भगवान रास्ते में आ जाता है। बिल्कुल, बिल्कुल।

और इसलिए कि सभी अच्छे शिक्षण, करेन और मैं रास्ते में इस बारे में बात कर रहे थे। कोई ऐसा व्यक्ति जिसे हम दोनों जानते हैं, एक बहुत ही प्रसिद्ध शिक्षक, और उसका बेटा अपनी सभी समस्याओं के लिए उस पर दोष लगाता है। और फिर, आपने मेरी ज़रूरतें पूरी नहीं कीं।

तो, क्या उन्हें ये कहानियाँ याद होंगी? मुझे ऐसा लगता है, मुझे ऐसा लगता है। ऐसा नहीं है कि यह पूरी तरह से उनके दिमाग से बाहर है। नहीं, नहीं, नहीं।

फिर, मुझे लगता है कि आपके पास पूरा स्पेक्ट्रम था। मुझे लगता है कि आपके यहाँ ऐसे लोग थे जो याद रखते थे और विश्वास करते थे और जो कुछ हो रहा था उससे टूटे दिल वाले थे। मुझे लगता है कि आपके यहाँ ऐसे लोग थे जिनके लिए राष्ट्र में उनकी सदस्यता बस जन्मसिद्ध अधिकार का मामला था।

और फिर बीच में स्पेक्ट्रम पर हर कोई। और फिर, मैं इसे वर्तमान से लेता हूँ। तो यह वहाँ है।

मुझे उस अंतिम कविता का आदेश हमेशा पसंद आया है, 31. उकाब की तरह पंख फैलाकर उड़ो, दौड़ो और थको मत, चलो और थको मत। किसी ने कहा कि बाजों के साथ उड़ना आसान है, चैंपियंस के साथ दौड़ना आसान है, लेकिन टर्की के साथ चलना बहुत कठिन है।

और बस। हमारे पास महान पुनरुत्थान हैं और हम उकाबों के साथ उड़ान भरते हैं। लेकिन जैसा कि उस आदमी ने कहा, मुझे इसकी परवाह नहीं है कि वे कितनी ऊंची छलांग लगाते हैं, मैं यह देखना चाहता हूँ कि जब वे नीचे आते हैं तो वे कितनी सीधी चाल से चलते हैं।

और यह विश्वासयोग्यता का वह दैनिक, स्थिर मार्ग है जिसके लिए हमें पवित्र आत्मा की सख्त जरूरत है। हम अक्सर सोचते हैं, ओह हाँ, मुझे यह बहुत बड़ा काम मिला है, हे पवित्र आत्मा मेरी मदद करो, मेरी मदद करो, मेरी मदद करो। लेकिन यह सिर्फ आज की बात है और मैं इसे यहाँ से ले सकता हूँ।

नहीं। ठीक है, एक अध्याय के लिए 10 मिनट। और क्या नया है? खैर, 40 बहुत महत्वपूर्ण है।

ठीक है, आईए 41 पर आगे बढ़ें। श्लोक 1 से 7 में, सबसे पहले, श्लोक 1 से 4 में, यहोवा क्या करने का दावा कर रहा है? उन्होंने साइरस को बड़ा किया है। हाँ।

मैंने पूर्व से एक को बुलाया है। और निस्संदेह, फारस बेबीलोन के पूर्व में है। यह वह जगह है जहाँ आज इराक है।

बेबीलोन वह जगह है जहां आज ईरान है। मैंने पूर्व से एक को बुलाया है। और यहां हम इन अलंकारिक प्रश्नों में से एक और प्रश्न के साथ हैं।

किसने किया यह? मैंने यह किया है। वह हमारे प्रश्न का उत्तर देता है। यहोवा, प्रथम और अन्त में, मैं ही वह हूँ।

अल्फा और ओमेगा, यह बिल्कुल सही है। अब यहाँ हिब्रू कहता है, और ताकि आप जान सकें कि मैं हिब्रू जानता हूँ। नहीं, यह चार शब्द लिख रहा है।

हिब्रू का क्रम यह साबित करता है कि हम सभी एक समय बाएं हाथ के थे। ठीक है। इसका शाब्दिक अर्थ है, मैं वह हूँ, लेकिन ग्रीक इसका अनुवाद अहंकार ईमी, मैं हूँ के रूप में करता हूँ।

जो भी यीशु का हूँ वे सब यहीं पर आधारित हैं। इब्राहीम से पहले भी मैं था। अनिहू, मैं यह हूँ।

हिब्रू में नपुंसकलिंग सर्वनाम नहीं है, लेकिन मुझे लगता है कि अगर ऐसा होता, तो वे इसे इसी तरह समझते। मैं यह हूँ, मैं हूँ। मैं ही सब कुछ हूँ।

मैं हूँ। और कोई दूसरा नहीं है। तो, 5, 6, और 7 में राष्ट्रों की प्रतिक्रिया क्या है? वे घबरा गये हैं।

वे भयभीत हैं। हे भगवन्, पृथ्वी की छोर तक ने देखा है, और डर गए हैं, और कांप उठे हैं। तो, उनकी प्रतिक्रिया क्या है? नई मूर्ति बनाओ।

जितना बड़ा उतना बेहतर। हां, हां। हमारी पुरानी मूर्तियाँ विफल हो गई हैं, तो आइए एक नई मूर्ति बनाएँ।

हमारे चारों ओर यह देखने के लिए आपको यहीं से बहुत दूर जाने की आवश्यकता नहीं है। इससे हम नहीं बचे, तो आइए इसका निर्माण करें और यह बच जाएगा। यदि आप सोचते हैं कि दुनिया आपको बचा सकती है, तो आप हर बार कोई नई समस्या आने पर नए रक्षक बनाने के लिए अभिशप्त हैं।

परन्तु परमेश्वर इस्राएल से क्या कहता है? श्लोक 8. डरो मत. अब, अगली बात जिस पर मैं वापस जाने से पहले बात करना चाहता हूँ वह यह है कि वह जैकब और इज़राइल को क्या कहते हैं? इज़राइल, क्या? मेरा सेवक, याकूब, मेरा चुना हुआ। हम इन अध्यायों में उस जोड़ी को बार-बार देखेंगे।

निश्चय ही परमेश्वर ने हमें त्याग दिया है। निश्चित रूप से हमारे पाप अंततः इतने बढ़ गए हैं कि भगवान को भी कहना पड़ा, मैं उस झुंड के साथ और कुछ नहीं कर सकता। मैं उनके साथ हूँ।

लेकिन नहीं, नहीं. तुम मेरे सेवक हो. तुम मेरे चुने हुए हो.

इसलिए, एक नए विश्व सम्राट के उदय के साथ ही दुनिया आतंक में फंस सकती है। आपको होना जरूरी नहीं है। आपको होना जरूरी नहीं है।

तुम मेरे नौकर हो। मैंने तुम्हें चुना है, त्यागा नहीं। अब, हमें इन अगले कई अध्यायों में डर न लगाने के पांच कारण मिलेंगे।

यहाँ पहला आता है। श्लोक 10 में क्या है? मैं तुम्हारे साथ हूँ। अध्याय 7 में उस बच्चे का नाम क्या था? उसका क्या नाम था? भगवान हमारे साथ है।

इमैनुएल। वह हमारे साथ है। और यहाँ एल है, भगवान।

हे भगवान, निश्चित रूप से आप हमारे साथ नहीं हैं। हमने पाप किया है। हमने अपने सारे वादे तोड़ दिए हैं।

हमने वो सभी चीजों की हैं जो हमें नहीं करनी चाहिए थीं। निश्चित रूप से आप हमारे साथ नहीं हैं। हाँ मैं हूँ।

मैं यहां आपके साथ हूँ। मैं कहीं दूर नहीं हूँ। मैं इस निराशा, हतोत्साह और मोहभंग के बीच में हूँ।

मैं यहां आपके साथ हूँ और आपको डरने की जरूरत नहीं है।' 11 और 12 कहते हैं, जो तुझ पर क्रोध करते हैं वे लज्जित और लज्जित होंगे। पद 12, तू उन को दूँगा जो तुझ से झगड़ते हैं, परन्तु वे तुझे न मिलेंगे।

क्यों? श्लोक 13, यहाँ डर न लगाने का दूसरा कारण आता है। उसकी पकड़ मजबूत है। मैं आपकी मदद करूँगा।

यह एक अद्भुत विचार है। मैं कोशिश करूँगा कि आज रात पूरा उपदेश न दूँ, क्योंकि अभी 8 बजे हैं। लेकिन वह यह नहीं कहता, बैठो और चुप रहो और मैं यह करूँगा।

न ही वह कहता है, तुम करो और मैं देखूँगा। वह कहता है, मैं तुम्हारी मदद करूँगा। यह एक अद्भुत विचार है।

यह एक अद्भुत विचार है। चलो भी। चलो साथ चलते हैं।

तुम शुरू करो और मैं खत्म करूँगा। मैं तुम्हारी मदद करूँगा। बिल्कुल।

बिल्कुल। बिल्कुल। हाँ।

ठीक है। खैर, अभी 8 बजे हैं और यहां अध्याय 41 में और भी बहुत कुछ है। इसलिए, हम वहां रुकने जा रहे हैं और अगली बार हम उसमें से कुछ लेंगे और आगे बढ़ेंगे।

ये अध्याय लंबे और भरे हुए हैं। इसलिए, यह मेरे लिए कठिन होगा, लेकिन मैं अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करूंगा।

आइये मिलकर प्रार्थना करें. भगवान आपका धन्यवाद, कि आप हमारी सहायता करने को तैयार हैं। हम, अपनी छोटी-छोटी कठिनाइयों के बावजूद, और आप हमारे साथ प्रवेश करके प्रसन्न होते हैं। और हमारे हाथों को मजबूत करें और हमारे दिमागों का मार्गदर्शन करें।

यह यशायाह की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. जॉन ओसवाल्ट हैं। यह सत्र संख्या 20, यशायाह अध्याय 40 और 41 है।